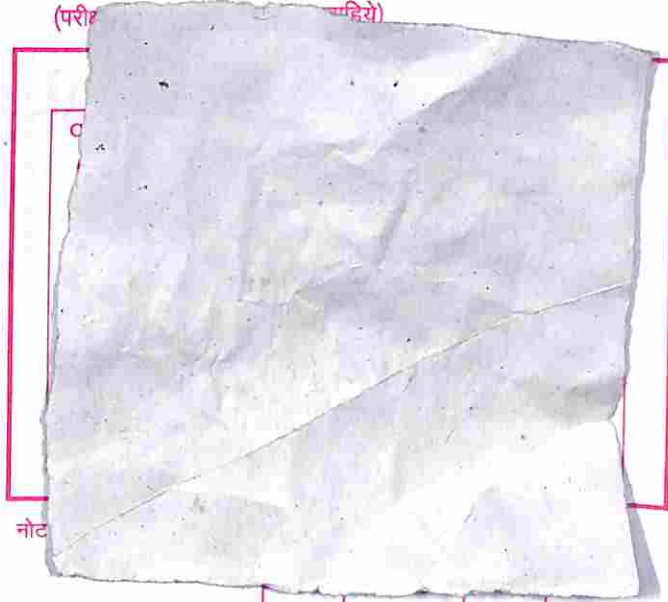


कुल पृष्ठ संख्या-32 (कवर पेज सहित)



2626620

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
उच्च माध्यमिक परीक्षा



माध्यम - हिन्दी अंग्रेजी
विषय कृषि जीव विज्ञान
परीक्षा का दिन शनिवार
दिनांक 16/04/2022

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

- परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)			
प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	9	19	4
2	4	20	4
3	8	21	
4	1½	22	
5	1½	23	
6	1	24	
7	1½	25	
8	1½	26	
9	1½	27	
10	1½	28	
11	1½	29	
12	1½	30	
13	1½	31	
14	1½	योग	55½
15	1½	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3	56	एफएन
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर 9 सकेतांक 36283

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है।168/2021

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
 - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
 - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
 - (iii) परीक्षा-केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
 - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस-पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
 - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
----------------------------	---------------	-------------------

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। (10)
- (i) 11.0 मि.मी. (स) (1)
 - (ii) बाजरा (ब) (1)
 - (iii) वैक्समैन 1944 (अ) (1)
 - (iv) टर्मिस्टिडी (द) (1)
 - (v) लेडी बर्ड बीटल (ब) (1)
 - (vi) गुलाबी सड़न कीट (क) (1)
 - (vii) . ३ (द) (1)
 - (viii) तबीजी, अजमेर (अ) (1)
 - (ix) मोर्गन (स) (1)

2. परपोषी की कोशिकाओं की संख्या बढ़ने से हुई उद्वृद्धि को अतिवर्धन कहते हैं। (1)

3. (1)



परीक्षक द्वारा प्रवृत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(ii)	टिड्डा <u>इन्सेक्टा</u> वर्ग का सदस्य है। ①
	(iii)	पौधों में नाइट्रोजन स्थिरीकरण को बढ़ाने वाला <u>Nif</u> (राइजोबियम) जीन है। ①
	(iv)	परंपरागत फसलों में सूधार की सबसे पुरानी विधि <u>समूह चयन</u> है। ①
8/1 ⑧	3.	(i) <u>प्रभनी क्रान्ति</u> , <u>पंजाब</u> <u>पद्मिनी</u> । ①
		(ii) <u>यसिका</u> , <u>आँत्र</u> , <u>मलद्वार</u> ①
		(iii) इस रोग के प्रकोप से <u>टमाटर</u> की पत्तियाँ कप के आकार में मुड़कर <u>बीघ</u> से <u>गुच्छों</u> में बदल जाती हैं।
		(iv) <u>सिस्टोसर्का</u> <u>ग्रीजैरिया</u> ①
		(v) <u>सफेद लट</u> , <u>कातरा</u> , <u>सैन्य कीट</u> । ①



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(vi) ट्रान्सजेनिक पादप :- जिन पादपों में वांछित लक्षण के लिए बाहरी DNA उपस्थित होता है, उसे ट्रान्सजेनिक पादप / पारजीनी पादप कहते हैं।

(vii) YAC → Yeast Artificial Chromosome
(यीस्ट कृत्रिम गुणसूत्र)

(viii) भारत 1

(खण्ड - ब)

4. स्लग के लक्षण :-

$\frac{1}{2} + \frac{1}{2} = 1$
1/2

- इसका शरीर द्विपार्श्वसममित नुकीला एवं लचीला होता है। तथा $CaCO_3$ का आवरण पाया जाता है।
- इसका शरीर आंतपाद, भ्रुवार, सिर में बँटा होता है।
- इसके सिर पर दो जोड़ी स्पर्शक होते हैं; तथा शृंगिका भी पाई जाती है।



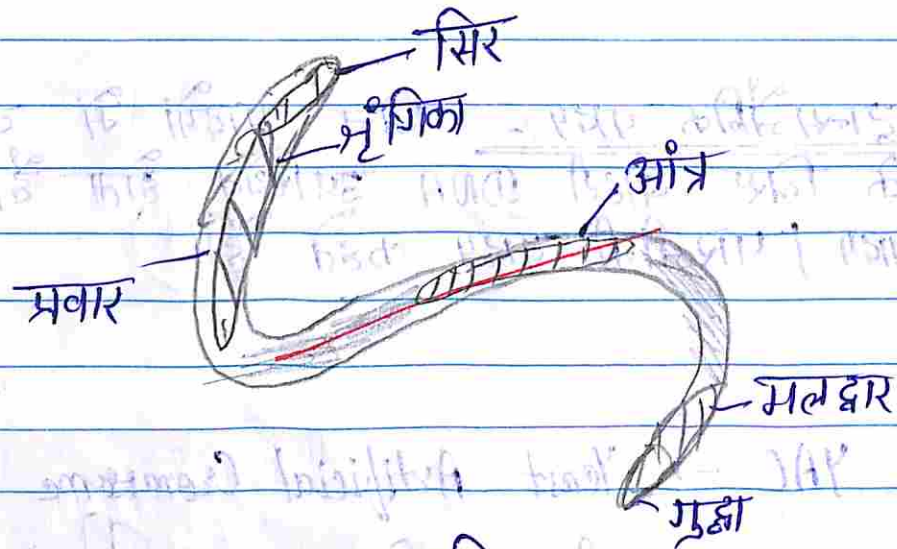
परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

1 1/2

5.



1/2 + 1/2 = 1

6. पादप महामारी रोग :-

'महामारी' शब्द का आशय एक समस्त स्थान के लोगों का उग्र रूप में प्रभावित होना।

जब यह मनुष्य में होती है, तो इसे मनुष्य मानव महामारी तथा जब यह पादपों में होती है, तो इसे पादप महामारी कहा जाता है।

जब रोग किसी पादप पर उग्र में फैलता है, तथा फसलों को सम्पूर्णतः नष्ट कर देता है, उसे पादप महामारी रोग कहते हैं।

- Ex:- ① गेहूं का सेली रोग ।
 ② चने धान का झोंकारोग ।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

7. आद्य जीवाणु / आर्की बैक्टीरिया :-

ये ऐसे जीवाणु जो विपरित आवासों जैसे गर्म झरनों, लवणीय जल, तालाबों, आदि में रहते हैं, आर्की बैक्टीरिया कहलाते हैं।

इनकी कोशिका अिति स्यूडोम्युरीन की बनी होती है, जो इसे विपरित परिस्थिति में रहने हेतु सक्षम बनाते हैं।

दलदली क्षेत्रों एवं गाय, भैंसों की आंतों में मेथेनोजन जीवाणु पाए जाते हैं, इसी कारण गाय के गोबर से मेथेन गैस (CH₄) उत्पन्न की जाती है।

8. विषाणु :- ये अतिसूक्ष्म दर्शीय, म्यूक्तिमुक्त या तो RNA या DNA द्विनी संरथ नहीं के प्रेसोमिटर से घिरे होते हैं।

परिपक्व विषाणु के कण को विरियॉन कहते हैं।

विषाणु में पाये जाने DNA या RNA के द्वि तरफ प्रोटीन का आवरण पाया जाता है, जिसे कैप्सिड कहते हैं।

विषाणु में संकुमण कारी प्रोटीन पाई जाती है, जिसे



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

न्यूक्लियोप्रोटीन कहते हैं।

यह अकोशिकीय कारक है।

EM:- T.M.V, B.M.V

9.

माइक्रोकॉन्ट्रिया

$1\frac{1}{2}$

लाइसोसोम

कोशिका
झिल्ली

कोशिका
द्रव्य

गुणसूत्र
कवक कोशिका

DNA (न्यूक्लिक
अम्ल)

ग्लाइकोजन

कैल्शियम
केन्द्रक

कोशिका भित्ति
राइबोसोम

10. पादप ऊतक संवर्धन का कृषि में महत्व :-

i) कार्बिक संवर्धन

ii) वाइरस मुक्त पौधों की प्राप्ति

iii) अप्रुणित नर पौधे

iv) कार्बिक प्लोनीय विविधता

$1\frac{1}{2}$

$1\frac{1}{2}$



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(i)	<p><u>कार्यिक संवर्धन :-</u></p> <p><u>पादप उत्तक संवर्धन द्वारा अनेक पौधों के कार्यिक भागों को पौष माध्यम में संवर्धित करके नए पौधे प्राप्त किये जाते हैं।</u></p> <p><u>धम:- अबरक, हल्दी।</u></p>
	(ii)	<p><u>वाइरस मुक्त पौधों की प्राप्ति :-</u></p> <p><u>पौधे का प्ररोहास \times विभज्योत्तक (मेरिस्टम) तथा शीर्षस्थ विभज्योत्तक वाइरस मुक्त होता है, अतः इनको पौष माध्यम में संवर्धित करके वाइरस मुक्त पौधे प्राप्त किये जा सकते हैं।</u></p>
	(iii)	<p><u>कार्यिक क्लोनीय विविधता :-</u></p> <p><u>इसके द्वारा शकरकंद की 'स्कालेट', सिग्मा की 'जिरेनियम' तथा सरसों की 'मूसा जय किसान' किस्म विकसित की गई।</u></p>

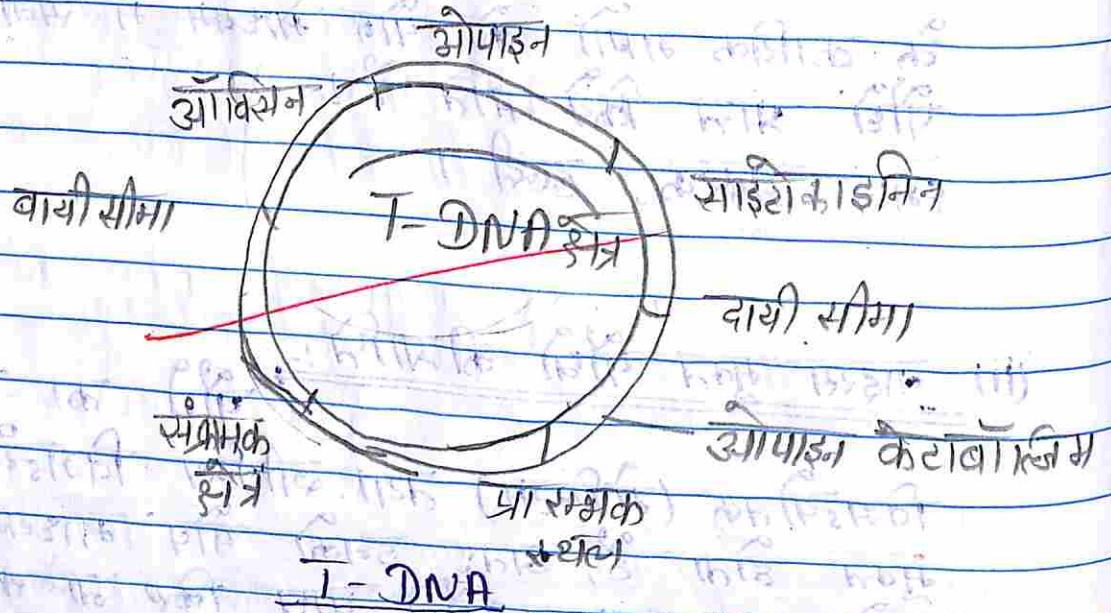


परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या
----------------------------	---------------

परीक्षार्थी उत्तर

11/2

11.



1/2 + 1/2 + 1/2
11/2

12. शुद्ध वंशक्रम चयन :-

किसी विविधतापूर्ण समष्टि में या स्वपरागित फसलों में से समयुग्मज लाइनों को छांटना शुद्ध वंशक्रम चयन कहलाता है।

→ इसमें फसलों का जीन प्रारूप एक समान होता है लक्षण प्रारूप में विविधता वातावरण के कारण होती है।

दोष:-

• इस चयन से प्राप्त विभेदों में अनुकूलता पूर्व की समष्टि से कम होती है।

• इस चयन के लिए आनुवंशिक विविधता का होना अनिवार्य है।



परीक्षक द्वारा प्रश्न संख्या परोक्षार्थी उत्तर प्रदत्त अंक

13. असुगुणिता :- किसी सजीव की कायिक कोशिका में उपस्थित द्विगुणित गुणसूत्रों ($2n$) में वृद्धि (अधिक एकादी गुणसूत्र की संख्या) में कमी। वृद्धि होना, असुगुणिता कहलाता है।

Ex:- $2n+1, 2n+2$

असुगुणिता का पादप प्रजनन में उपयोग

• एकाधिसूत्रियों द्वारा प्रतिस्तापन लाइने बनाई जाती हैं, इन प्रतिस्तापन लाइनों की सहायता से जीन को स्थानान्तरित किया जाता है।

14. प्रतीप संकरण के गुण :-

• इसमें प्रतिवर्ष केवल 10-100 पौधे ही उगाने पड़ते हैं।

• इसके प्रभेदों को किसान शीघ्रता से ग्रहण कर लेता है, क्योंकि ये उसकी देखरेख में की जाती हैं।

• यह सुगम, सरल एवं सस्ती वैज्ञानिक विधि है।

• इसको किसानों के सामान्य स्तर पर किया जा सकता है।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

15. उत्परिवर्तन:- $\frac{1}{2} + \frac{1}{2} + \frac{1}{2}$
 $\frac{3}{2}$

किसी सजीव के लक्षण में अकार्मिक एवं वंशानुगत होने वाले परिवर्तन को उत्परिवर्तन कहते हैं।

ये निम्न दो प्रकार का होता है:-

i) स्वतः उत्परिवर्तनii) प्रेरित उत्परिवर्तन

i) स्वतः उत्परिवर्तन:- ऐसा उत्परिवर्तन जो बिना किसी उत्परिवर्तजन के उपचार/सहायता से होता है, स्वतः उत्परिवर्तन कहलाता है।

ii) प्रेरित उत्परिवर्तन:-

ऐसा उत्परिवर्तन जो भौतिक एवं रासायनिक उपचार [अर्थात् उत्परिवर्तजन की सहायतासे] से होता है, प्रेरित उत्परिवर्तन कहलाता है।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(खण्ड - स)

16. सब्जियों के जड़ग्रन्थि रोग के लक्षण:-

- $\frac{1}{2} \times 6 = 3$
- यह रोग खेतों में छोटे-छोटे चकत्तों में दिखाई देता है।
 - जुताई करने पर यह रोग फैल जाता है।
 - इस रोग के प्रकोप से गाजर, सली की जड़े रुझ, मुगदराकार खंड कठोर हो जाती है।
 - स्वस्थ जड़ों की अपेक्षा जड़े 2-3 गुणा फूल जाती है।
 - नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैश का ऊपर संचय नहीं होता तथा ये जड़ों में ही एकत्रित होते रहते हैं।
 - इससे ग्रसित पौधे विकसित नहीं हो पाते हैं, तथा उनकी बृद्धि रुक जाती है।
 - अनेक जड़ों को उखाड़कर देखने पर इसके ऊपर फुंसी जैसी संरचना बन जाती है।
 - पौधा सूखकर मर जाता है, उपज में भारी कमी होती है।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(14-2025)

#

17. वाजेर का अर्घि (चेपा) रोग :-H1H
= (3)रोगजनक :- क्लेविसेप्स फ्यूजीफॉर्मिस नामक कवक।लक्षण :- इस रोग के लक्षण पुष्पक्रम पर दिखाई देते हैं, इसे निम्न भागों में बाँटा गया है।

i) मधु बिन्दू अवस्था।

ii) स्क्लेरोशिया अवस्था।i) मधु-बिन्दू अवस्था :- इस रोग से ग्रसित पौधों की बालियों पर सूखी गुलाबी, द्वितीय शहद के समान भूरे रंग का चिपचिपा पदार्थ दिखाई देता है।ii) स्क्लेरोशिया अवस्था :-मधुबिन्दू अवस्था के 10 दिन बाद काले-भूरे रंग के स्क्लेरोशिया बाली के स्थान पर दिखाई देते हैं।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

रासायनिक प्रबन्धन:-

इस रोग के नियंत्रण हेतु प्रजिनोकोल (शुष्क) या कॉपर आक्सी क्लोराइड या हेक्सेमीजोल या मैन्कोजेव या कार्बेन्डाजिम (0.1%) दवा का प्रयोग करना चाहिए।

18. फडका/टिड्डी:-

प्रबन्धन:-

① रासायनिक प्रबन्धन:-

टिड्डी के नियंत्रित हेतु सूखे से पूर्व आग फैकने वाले रंग से टिड्डी को नष्ट कर देना चाहिए।

• नीम का तेल (0.1) टिड्डी नियंत्रण हेतु उपयोग किया जाता है।

② जैविक प्रबन्धन:-

ट्रोक्सप्रोसेरस नामक भूंग टिड्डी के अण्डों को खाकर नष्ट कर देता है।

• वैंसीलस थुरन्जिएन्सिस को टिड्डी के जैविक नियंत्रण हेतु प्रयोग लिया जाता है।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		<ul style="list-style-type: none">• तिलियार, पक्षी, मैना, तोता टिड्डी को खाकर नष्ट कर देते हैं।
		<p><u>3) रासायनिक प्रबंधन:-</u></p> <ul style="list-style-type: none">• टिड्डी के अण्डों को मारने के लिए प्रतिशत लिण्डेन चूर्ण का भ्रूकाव करते हैं।• टिड्डी के रास्ते में सुबह के समय जहरीला चारा [भ्रूसा + सोडियम फ्लुसिलिकेट + पेरिसल्फमिथिस + शीरा] रखकर इनको मारा जाता है।

BSER-168/2021



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

19. मूंगफली के पर्ण चिन्ती (टिक्का) रोग:-

रोगजनक :- सकोस्पोरा ओरेकिडीकोला व सकोस्पोरिडियम परसोनेटम नामक कवक।

लक्षण:- इसके लक्षणों को धब्बों/समय के आधार पर निम्न दो भागों में बांटा गया है।

- ① अंगेती पत्ती धब्बा।
- ② पड़ेती पत्ती धब्बा।

अंगेती पत्ती धब्बा

जब मूंगफली में धब्बे 2-3 सप्ताह में दिखाई देते हैं, तो उसे अंगेती पत्ती धब्बा कहते हैं।

इसमें धब्बे अनियमित आकार के होते हैं।

इसमें धब्बे काले तथा पीले धरे से घिरे हुए होते हैं।

पड़ेती पत्ती धब्बा

जब रोग के धब्बे 6-8 सप्ताह में पीछे पर दिखाई देते हैं, तो उसे पड़ेती पत्ती धब्बा कहते हैं।

इसमें धब्बे गोलाकार होते हैं।

इसमें धब्बे काले तथा पीले धरे (आभा मण्डल) से घिरे हुए नहीं होते।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

इसमें धब्बे कम, बड़े तथा 8-10 mm व्यास के होते हैं।

इसमें धब्बे अधिक, छोटे तथा 6-8 mm व्यास के होते हैं।

यह कम हानिकारक होता है।

यह अधिक हानिकारक होता है।

रोकथाम:-

सर्कोस्पौरा और किडी कोला

सर्कोस्पोरिडियम परसोनेटम

BSEB-168/2021

प्रबन्धन:-

① अस्थ प्रबन्धन:-

- गमियों के दिनों में खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए।
- रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर फेंक देना चाहिए।
- रोगरहित स्थाक का प्रयोग करना चाहिए।

② जैविक नियंत्रण:-

- स्ट्रुडोमोनस फ्लोरोसेन्स व ट्राइमेडमा कल्चर से उपचार करना चाहिए।
- रोगरोधी किस्म URI-3 व UCMM का प्रयोग करना चाहिए।



शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

⑤ रासायनिक प्रबन्धन:-

इस रोग के नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिमि (0.1%), इमिडाक्लोप्रिड (25mu), मेन्कोजेब का सुरकाव व छिड़काव करना चाहिए।

शे. कातरा:-

वैज्ञानिक नाम:- रैमसेक्टा मूरी।

जीवनचक्र:-

वर्षा ऋतु की पहली या दूसरी अच्छी बरसात के बाद कातरा के प्रौढ़ शलभ भूमि से निकलकर प्रकाश स्रोत की ओर आकर्षित होते हैं।

• प्रौढ़ मादा नर से मैथुन क्रिया के कुछ घण्टों पश्चात् पत्तियों की नीचली सतह पर समूह में अण्डे देती हैं।

• बीज अण्डे हल्के पीले रंग के पोस्त के बीजों के समान होते हैं।

• एक मादा अपने जीवनकाल में 1500 तक अण्डे देती हैं।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

• अण्डो से घसे 5 दिन में शिशु सूंडी बहार निकल आती है। जो प्रारम्भ में समूह में बाद में अलग-अलग पौधे को खाती है।

• यह अपनी को त्वचा का दृढ़ बार निर्माण करके 15-23 दिन में पूर्ण विकसित हो जाती है।

• यह कोशित (प्यूपा) में परिवर्तित होने से पहले आस-पास की पड़ती श्रुमि, मैटों एवं खेतों से निकलकर 10-30 सेमी. गहराई में जाकर कोषावस्था में परिवर्तित हो जाती है।

• यह 9-10 माह कोषावस्था में ही रहते हैं।

• इसका जीवन चक्र 26 से 41 दिनों का होता है।

• वर्ष में इसकी एक या कभी-कभी एक से अधिक अतिरिक्त पीढ़ियाँ पाई जाती हैं।

प्रबन्धन:-

① शस्य प्रबन्धन:-

मीठम ऋतु में खेत की गहरी जुताई



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
----------------------------	---------------	-------------------

करके अण्डों को नष्ट किया जाता है।

- अण्डों को प्रसफोटन से पहले नष्ट कर देना चाहिए।

② जैविक नियंत्रण :-

- खेत की जहरी जुताई करनी चाहिए क्योंकि पक्षी (मैना, कौआ, तोता) इसको खाकर नष्ट कर दें।
- परजीव्यायु ड्राइवोग्राम व टेलिजोमस प्रजाति को इसके नियंत्रण हेतु उपयोग करना चाहिए।

③ रासायनिक प्रबन्धन :-

मैलाथियान एवं क्यूनालफोस २५ ई.सी. चूर्ण का २५ kg/ha की दर से श्रुकाव करना चाहिए।

- खेत में 30x30 सेमी. की नालिया खोदकर इसमें चूर्ण डालकर कृता की आवागमन के समय नष्ट किया जा सकता है।

समाप्त

55/2

56

36283



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

1. (a) (i) ... (ii) ...

... ..

...

... ..

... ..

BSER-1682021

...

... ..

... ..

...

Handwritten signature and date in red ink.

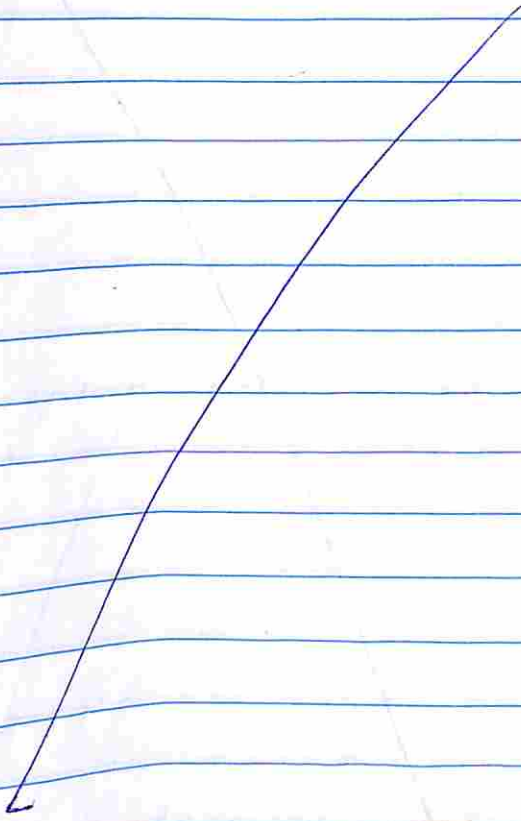


परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

USER-168/2021





परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न.
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्यां

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-68/2021



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSEER-168/2021

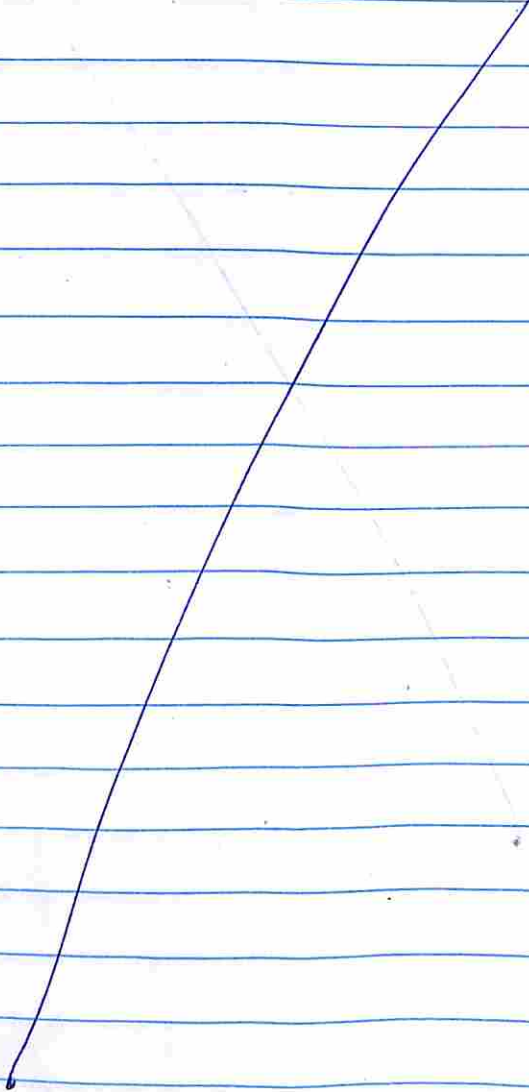


परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSER-1/68/2021





परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSEK-168/2021

